कक्षा – 9
विषय – हिन्दी
खण्ड–अ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन करें–

प्रश्न 1. भारतेन्दु युग के लेखक नहीं है –

अ) बालकृष्ण भट्ट
ब) प्रतापनारायण मिश्र
स) प्रेमचन्द्र
द) राधाचरण गोस्वामी।

प्रश्न 2. भारतेन्दु युग की समय सीमा है –

अ) सन् 1868 ई० से 1900 ई० तक
ब) सन् 1900 ई० से 1920 ई० तक
स) सन् 1865 ई० से 1900 ई० तक
द) सन् 1826 ई० से 1833 ई० तक।

प्रश्न 3. 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका के सम्पादक है –

अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
ब) पं० बालकृष्ण भट्ट
स) प्रतापनारायण मिश्र
द) बालमुकुन्द गुप्त।

प्रश्न 4. 'कविवचन सुधा' पत्रिका के सम्पादक है –

अ) किशोरी लाल गोस्वामी
ब) अम्बिकादत्त व्यास
स) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
द) राधाकृष्ण दास।

प्रश्न 5. 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका के सम्पादक है –

अ) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
ब) हजारीप्रसाद द्विवेदी
स) बालमुकुन्द गुप्त
द) पं० बालकृष्ण भट्ट।

प्रश्न 6. 'भारत–दुर्दशा' के रचनाकार है –

अ) महावीर प्रसाद द्विवेदी
ब) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
स) बालमुकुन्द गुप्त
द) पं० बालकृष्ण भट्ट।

प्रश्न 7. 'प्रताप पीयूष', 'निबन्ध नवनीत', 'प्रताप समीक्षा' किस विधा की रचना है –

अ) निबन्ध
ब) नाटक
स) एकांकी
द) आत्मकथा।

प्रश्न 8. 'ब्रह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान' पत्रिका का सम्पादन किसने किया?

अ) प्रतापनारायण मिश्र
ब) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
स) महावीर प्रसाद द्विवेदी
द) राधाकृष्ण।

प्रश्न 9. 'बात' प्रतापनारायण मिश्र जी द्वारा किस विधा में लिखा गया निबन्ध है –

अ) हास्य व्यंग्य प्रधान शैली में लिखा गया निबन्ध है।
ब) गवेषणात्मक शैली में लिखा गया निबन्ध है।
स) विचारात्मक शैली में लिखा गया निबन्ध है।
द) विवेचनात्मक शैली में लिखा गया निबन्ध है।

प्रश्न 10. गद्य का मुख्य उद्देश्य विचारों एवं भावों .... में अभिव्यक्त है।

अ) सरल भाषा
ब) अलंकृति शैली
स)लयात्मक शैली
द) प्रवाह शैली।

प्रश्न 11. 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक थे–

अ) महावीर प्रसाद द्विवेदी
ब)जगन्नाथदास रत्नाकर
स)किशोरीलाल गोस्वामी
द) अध्यापक पूर्ण सिंह।

प्रश्न 12. द्विवेदी युग की समय सीमा है –

अ) 1900 ई0 से 1918 ई0 तक
ब)1903 ई0 से 1918 ई0 तक
स)1905 ई0 से 1918 ई0 तक
द) 1900 ई0 से 1917 ई0 तक।

प्रश्न 13. द्विवेदी युग के लेखक है–

अ) प्रतापनारायण मिश्र
ब)आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
स)रामचन्द्र शुक्ल
द) बालमुकुन्द गुप्त।

प्रश्न 14. द्विवेदी युग की विशेषता है –

अ) तद्भव शब्दों का प्रयोग
ब) गद्य के परिष्कार एवं परिमार्जन का कार्य
स)तत्सम शब्दों का प्रयोग
द) देशज शब्दों का प्रयोग।

प्रश्न 15. आदिकाल की अवधि है –

अ) सन् 934 ई0 से 1318 ई0 तक
ब) सन् 933 ई0 से 1318 ई0 तक
स)सन् 933 ई0 से 1320 ई0 तक
द) सन् 936 ई0 से 1318 ई0 तक।

प्रश्न 16. भक्तिकाल कब से कब तक माना जाता है –

अ) सन् 1335 ई0 से 1643 ई0 तक
ब) सन् 1318 ई0 से 1643 ई0 तक
स) सन् 1318 ई0 से 1603 ई0 तक
द) सन् 1318 ई0 से 1644 ई0 तक।

प्रश्न 17. 'आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा' किस काल की प्रमुख विशेषता है –

अ) रीतिकाल
ब) वीरगाथा काल
स) भक्तिकाल
द) आधुनिक काल।

प्रश्न 18. 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता है –

अ) दलपति विजय
ब) चन्दबरदायी
स) जगनिक
द) मधुकर।

प्रश्न 19. रासो ग्रन्थ की भाषा है –

अ) पिंगल
ब) ब्रजभाषा
स) अवधी
द) खड़ीबोली।

प्रश्न 20. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि है –

अ) सूरदास
ब) कबीरदास
स) तुलसीदास
द) केशवदास।

प्रश्न 21. 'रामचरित मानस' किस भाषा में लिखा गया है –

अ) बघेली
ब) अवधी
स) राजस्थानी
द) खड़ीबोली।

प्रश्न 22. 'साहित्य लहरी' एवं 'सूरसारावली' के रचयिता है –

अ) कबीरदास
ब) सूरदास
स)जायसी
द) केशवदास।

प्रश्न 23. निम्नलिखित में से कौन कृष्ण भक्तिधारा के नहीं है –

अ) नन्ददास
ब) कबीरदास
स) सूरदास
द) कृष्णदास।

प्रश्न 24. मीराबाई किस भाषा की कवयित्री है?

अ) अवधी
ब) ब्रज
स) प्राकृत
द) खड़ीबोली।

प्रश्न 25. मीराबाई किस काल की कवयित्री है?

अ) आदिकाल
ब) भक्तिकाल
स) रीतिकाल
द) आधुनिक काल।

प्रश्न 26. मीराबाई का जन्म स्थान है –

अ) उदयपुर
ब) जोधपुर
स) मेंवाड़
द) जयपुर।

प्रश्न 27. 'बसो मेरे नैनन में नन्दलाल' किसकी पंक्ति है?

अ) सूरदास
ब) मीराबाई
स) रसखान
द) तुकाराम।

प्रश्न 28. 'नरसी जी का मायरा' किसकी रचना है?

अ) सूरदास
ब) तुलसी
स) मीराबाई
द) रसखान।

प्रश्न 29. मीराबाई का जन्म कब हुआ?

अ) 1498 ई0
ब) 1500 ई0
स) 1502 ई0
द) 1504 ई0 ।

प्रश्न 30. मीरा के काव्य का प्रमुख स्वर है –

अ) कृष्ण भक्ति
ब) रामभक्ति
स) शिवभक्ति
द) इनमें से कोई नही।

प्रश्न 31. कबीर की भाषा क्या है?

अ) पंचमेल खिचड़ी → सधुक्कड़ी   ब) अवधी
स) ब्रज   द) भोजपुरी।

प्रश्न 32. 'मसि कागद छुऔ नहि कलम गहयौ नहि हाथ' किस कवि के बारे में कथन है?

अ) सूरदास   ब) तुलसी
स) रहीम   द) कबीर।

प्रश्न 33. कबीर किस भक्ति धारा के कवि थे?

अ) निर्गुण भक्ति धारा   ब) सगुण भक्ति धारा
स) सूफी सम्प्रदाय   द) इनमें से कोई नही।

प्रश्न 34. 'मगहर' क्यों प्रसिद्ध है?

अ) कबीर का जन्म स्थान   ब) कबीर का निवास स्थल
स) रहीम का जन्म स्थान   द) इनमें से कोई नही।

प्रश्न 35. किस कवि का सम्बन्ध भक्तिकाल से नहीं है?

अ) सूरदास   ब) तुलसीदास
स) कबीर   द) बिहारी। — रीतिकाल

प्रश्न 36. कबीर का जन्म स्थान है –

अ) प्रयाग   ब) काशी
स) मथुरा   द) मगहर।

प्रश्न 37. कबीर ने इस शरीर की तुलना किससे की है –

अ) मिट्टी के कच्चे घड़े से   ब) लोहे के घड़े से
स) सोने के घड़े से   द) इनमें से कोई नही।

प्रश्न 38. रहीम किस काल के कवि है?

अ) भक्तिकाल   ब) आदिकाल
स) रीतिकाल   द) अधुनिक काल।

प्रश्न 39. रहीम का जन्मस्थान है –

अ) लाहौर
ब) मुलतान
स) आगरा
द) दिल्ली।

प्रश्न 40. रहीम किस भाषा से सम्बन्ध रखते थे?

अ) अवधी
ब) ब्रज
स) भोजपुरी
द) मीराबाई।

प्रश्न 41. 'रास पंचाध्यायी' के रचनाकर है –

अ) रहीम
ब) सूरदास
स) तुलसी
द) मीराबाई।

प्रश्न 42. रहीम का कौन सा ग्रन्थ 'नीति के दोहे' का संकलन है ?

अ) रहीम सतसई
ब) श्रृंगार सतसई
स) रहीम रत्नावली
द) मदनाष्टक।

प्रश्न 43. 'रास पंचाध्यायी' का आधार स्तम्भ है –

अ) रामायण
ब) महाभारत
स) श्रीमद् भागवत पुराण
द) इनमें से कोई नही।

प्रश्न 44. बैरम खाँ किसका संरक्षक था?

अ) अकबर
ब) जहाँगीर
स) हुमाँयू
द) शाहजहाँ।

प्रश्न 45. 'जीता ज्यो जीवन से उदास' में कौन सा अलंकार है –

अ) अनुप्रास
ब) उपमा
स)यमक
द) उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 46. 'चारू चन्द्र की चंचल किरणे' में कौन सा अलंकार है –

अ) यमक
ब) अनुप्रास
स) उपमा
द) उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 47. 'मर्त्यलोक मालिन्य मेटने स्वामी संग जो आई है' में कौन सा अलंकार है –

अ) उपमा　　ब) अनुप्रास

स)श्लेष　　द) उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 48. 'खग कुल कुल सो बोल रहा, किसलय का अंचल डोल रहा' में कौन सा अलंकार है –

अ) अनुप्रास　　ब) श्लेष

स) यमक　　द) उपमा।

प्रश्न 49. 'रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून' में कौन सा अलंकार है –

अ) यमक　　ब) श्लेष

स) उत्प्रेक्षा　　द) अनुप्रास।

प्रश्न 50. 'तरनि तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाए' में कौन सा अलंकार है –

अ) यमक　　ब) श्लेष

स) अनुप्रास　　द) उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 51. जहां एक शब्द की अनेक बार भिन्न अर्थ में आवृति हो, वह अलंकार है –

अ) श्लेष　　ब) अनुप्रास

स) यमक　　द) उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 52. 'श्रृंगार रस' का स्थायी भाव है –

अ) शांत　　ब) करूण

स) रति　　द) निर्वेद।

प्रश्न 53. 'रति' किस रस का स्थायी भाव है ?

अ) करूण　　ब) वीर

स) श्रृंगार　　द) रौद्र।

प्रश्न 54. ''मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे। यमराज से युद्ध में प्रस्तुत सदा मानों मुझे।।'' में कौन सा रस प्रयुक्त है?

अ) करूण　　ब) वीर

स) श्रृंगार द) रौद्र।

प्रश्न 55. 'उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है ?

अ) रौद्र ब) भयानक
स) वीर द) अद्‌भुत।

प्रश्न 56. 'साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धारि, सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।' में कौन सा रस प्रयुक्त है ?

अ) वीर ब) रौद्र
स) अद्‌भुत द) भयानक।

प्रश्न 57. 'जो सम्पति सिव रावनहि दीन दिये दस माथ। सो सम्पदा विभीषनहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ।' में कौन सा रस प्रयुक्त है ?

अ) रौद्र ब) वीर
स) भयानक द) शांत।

प्रश्न 58. 'हे खग–मृग हे मधुकर स्रेनी, तुम देखी सीता मृगनयनी' में रस प्रयुक्त है –

अ) वीर ब) श्रृंगार
स) शांत द) करूण।

प्रश्न 59. चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएं होती है –

अ) 24 ब) 13
स) 16 द) 11

प्रश्न 60. बंदऊ गुरू पद पदुम परागा। सुरूचि सुवास सरस अनुरागा।। अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रूज परिवारू।। में प्रयुक्त पंक्तियों में कौन सा छन्द निहित है ?

अ) दोहा ब) सोरठा
स) चौपाई द) सवैया।

प्रश्न 61. दोहा छन्द के पहले एवं तीसरे चरण में मात्राएं होती है –

अ) 11 ब) 16
स) 13 द) 24

प्रश्न 62. ''राम नाम मणि दीप धरू, जीह देहरी द्वार, तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार।।'' में पयुक्त छन्द है –

अ) चौपाई ब) दोहा

स) सोरठा द) रोला।

प्रश्न 63. '' मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ। जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होइ।। में प्रयुक्त छन्द है –

अ) सोरठा ब) चौपाई

स) दोहा द) रोला।

प्रश्न 64. प्रत्येक चरण में 16 मत्राएं और अन्त में 2 दीर्घ (गुरू) यह किस छन्द का लक्षण है –

अ) दोहा ब) सोरठा

स) रोला द) चौपाई।

प्रश्न 65. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य का चयन करें–

अ) तुम्हारा नाम क्या है। ब) तुम्हारा नाम क्या है?

स) तुम्हारा – नाम क्या है। द) तुम्हारा नाम क्या है।

प्रश्न 66. माता–पिता, दिन–रात आदि के बीच किस विराम चिह्न का प्रयोग हुआ है?

अ) समता सूचक ब) योजक

स) संक्षेप चिह्न द) अल्पविराम।

प्रश्न 67. अस्थि शब्द का तद्भव बताइए –

अ) कलश ब) हड्डी

स) अश्रु द) अग्र।

प्रश्न 68. 'चिड़िया' का तत्सम शब्द है–

अ) कपोत ब) चटका

स) कोकिल द) चन्द्रिका।

प्रश्न 69. अज्ञान का विलोम है–

अ) प्रखर
ब) ज्ञान
स) ज्ञानी
द) तेज।

प्रश्न 70. कमल, राजीव, जलज, नलिन आदि कहलाते हैं –

अ) विलोम
ब) पर्यायवाची
स) उपसर्ग
द) प्रत्यय ।

प्रश्न 71. 'विराम' का अर्थ बताइए–

अ) आराम
ब) रूकना या ठहरना
स) रोकना
द) योजक।

प्रश्न 72. 'चंचल' शब्द का विलोम है–

अ) सजल
ब) स्थिर
स) चटका
द) कोकिल।

प्रश्न 73. 'दीया' का तत्सम शब्द है–

अ) विद्युत
ब) दीपक
स) रोशनी
द) बिजली।

प्रश्न 74. गंगा का पर्यावाची शब्द है –

अ) पीयूष
ब) मंदाकिनी
स) सरिता
द) सरोवर।

प्रश्न 75. 'निकेतन' शब्द का पर्यायवाची है –

अ) कगार
ब) गृह
स) कृपण
द) तिमिर।

प्रश्न 76. 'दुर्बल' का विलोम शब्द है –

अ) दशम
ब) सबल
स) अक्षि
द) उलूक।

प्रश्न 77. जिस समास में पूर्व–पद प्रधान होता है उसे कहते है –

अ) तत्पुरूष
ब) अव्यय
स) द्विगु
द) बहुव्रीहि।

प्रश्न 78. 'प्रतिदिन' का समास विग्रह है –

अ) प्रत्येक + दिन
ब) प्रतिदिन
स) प्रति + दिन
द) प्रति + रोज।

प्रश्न 79. 'समास' का अर्थ है –

अ) समास पद
ब) संक्षेप
स) समस्त पद
द) पहला पद।

प्रश्न 80. यदि 'अ' अथवा 'आ' के पश्चात ह्रस्व अथवा दीर्घ ई, उ आए तो कौन सी संधि होती है –

अ) दीर्घ संधि
ब) गुण संधि
स) यण संधि
द) अयादि संधि।

प्रश्न 81. गुण संधि का सूत्र है –

अ) इकोयणचि
ब) अकः सवर्णे दीर्घः
स) आद्गुणः
द) वृद्धिरेचि।

प्रश्न 82. उपेन्द्रः का संधि विच्छेद होगा –

अ) उप + इन्द्रः
ब) उपः + इन्द्र
स) उपा + एन्द्र
द) उपः + इन्द्रः।

प्रश्न 83. भाग्योदयः का संधि विच्छेद होगा –

अ) भाग्या + उदयः
ब) भाग्यः + उदया
स) भाग्य + उदयः
द) भाग + उदय ।

प्रश्न 84. वसन्तर्तुः का संधि विच्छेद होगा –

अ) वसंत + ऋतुः
ब) वसंतः + ऋतुः
स) वसंतां + ऋतु
द) वसंता + ऋतु।

प्रश्न 85. समय + उचित की संधि होगी –

अ) समयोचित　　　　ब) समया उचित

स) समयु +उचितः　　　　द) सम + उचित।

प्रश्न 86. कवि + इन्द्रः की संधि होगी –

अ) कविन्द्रः　　　　ब) कवीन्द्रः

स) कवेन्द्रः　　　　द) कवीइन्द्र।

प्रश्न 87. वधू + उत्सव की संधि होगी –

अ) वधूत्सवः　　　　ब) वधुत्सवः

स) वधोत्सव　　　　द) वधुउत्सव।

प्रश्न 88. 'रामम्' शब्द में विभक्ति और वचन है –

अ) द्वितीया एवं एकवचन　　　　ब) द्वितीया एवं बहुवचन

स) द्वितीया एवं द्विवचन　　　　द) तृतीया एवं एकवचन।

प्रश्न 89. 'हरी' शब्द में विभक्ति और वचन है –

अ) प्रथमा एवं द्विवचन　　　　ब) चतुर्थी एवं द्विवचन

स) तृतीया एवं द्विवचन　　　　द) चतुर्थी एवं एकवचन।

प्रश्न 90. 'रामेषु' शब्द में विभक्ति और वचन है –

अ) सप्तमी एवं बहुवचन　　　　ब)षष्ठी एवं बहुवचन

स)द्वितीया एवं एकवचन　　　　द)तृतीया एवं द्विवचन।

प्रश्न 91. 'हरये' शब्द में विभक्ति और वचन है –

अ) चतुर्थी एवं एकवचन　　　　ब) द्वितीया एवं बहुवचन

स)तृतीया एवं द्विवचन　　　　द)पंचमी एवं एकवचन।

प्रश्न 92. 'हरिषु' शब्द में विभक्ति और वचन है –

अ) षष्ठी एवं बहुवचन　　　　ब) पंचमी एवं द्विवचन

स)चतुर्थी एवं एकवचन　　　　द) षष्ठी एवं एकवचन।

= सप्तमी बहु०

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

प्रश्न 93. धातु किसे कहते है –

अ) क्रिया ब) सर्वनाम
स) संज्ञा द) अव्यय ।

प्रश्न 94. 'गच्छति' शब्द में पुरूष और वचन है –

अ) प्रथम पुरूष एवं एकवचन ब) प्रथम पुरूष एवं द्विवचन
स) मध्यम पुरूष एवं बहुवचन द) प्रथम पुरूष एवं द्विवचन।

प्रश्न 95. लट् लकार किसे कहते है ?

अ) वर्तमान काल ब) भूतकाल
स) भविष्य काल द) आज्ञार्थक।

प्रश्न 96. 'गच्छावः' शब्द में पुरूष और वचन है –

अ) उत्तम पुरूष एवं द्विवचन अ) प्रथम पुरूष एवं द्विवचन
स) मध्यम पुरूष एवं द्विवचन स) प्रथम पुरूष एवं बहुवचन।

प्रश्न 97. 'अगच्छत' में लकार एवं पुरूष है –

अ) लङ् लकार एवं प्रथम पुरूष ब) लट् लकार एवं मध्यम पुरूष
स) लोट् लकार एवं उत्तम पुरूष द) लङ् लकार एवं मध्यम पुरूष ।

प्रश्न 98. 'कुरूतः' शब्द में पुरूष और वचन है –

अ) प्रथम पुरूष एवं एकवचन ब) मध्यम पुरूष एवं एकवचन
स) उत्तम पुरूष एवं एकवचन द) मध्यम पुरूष एवं द्विवचन।

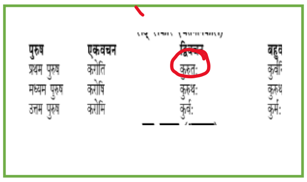

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुव
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्व
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

प्रश्न 99. 'कुक्षवाम्' शब्द में पुरूष और वचन है –

अ) प्रथम पुरूष एवं द्विवचन ब) प्रथम पुरूष एवं एकवचन
स) प्रथम पुरूष एवं बहुवचन द) प्रथम पुरूष एवं द्विवचन।

प्रश्न 100. 'करिष्यति' शब्द में पुरूष और वचन है –

अ) एकवचन एवं प्रथम पुरूष ब) द्विवचन एवं प्रथम पुरूष
स)बहुवचन एवं प्रथम पुरूष द)एकवचन एवं उत्तम पुरूष।

प्रश्न 101. 'भवायः' शब्द में पुरूष और वचन है –

अ) उत्तम पुरूष एवं बहुवचन
ब) प्रथम पुरूष एवं द्विवचन
स) मध्यम पुरूष एवं द्विवचन
द) उत्तम पुरूष एवं द्विवचन।

प्रश्न 102. लोट् लकार का अर्थ है–

अ) आज्ञार्थक
ब) चाहिए
स) भविष्यत
द) वर्तमानकाल।

प्रश्न 103. 'भवेयम्' शब्द में लकार और वचन है –

अ) विधिलिंग एवं एकवचन
ब) विधिलिंग एवं द्विवचन
स) विधिलिंग एवं बहुवचन
द) लोट् एवं एकवचन।

खण्ड–ब

वर्णनात्मक प्रश्न

निम्नांकित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

1– राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहिं।
क्या ले गुर संतोषिए, हौंस रही मन माहि।।

(क) 'राम नाम के पटतरे' से कवि का क्या आशय है?
(ख) गुरू को संतोष किस प्रकार मिल सकता है?
(ग) प्रस्तुत दोहे का भाव स्पष्ट कीजिए।

2– भगत भजन हरि नावँ है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा वाचा कर्मणाँ, कबीर सुमिरण सार ।।

(क) 'दूजा दुक्ख अपार' से कवि का क्या आशय है?

(ख) 'मनसा,वाचा, कर्मणाँ' से कवि क्या कहना चाहता है?
(ग) 'सार' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

3– जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहिं।

सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि ।।

(क) 'दीपक देखने' से कवि का क्या आशय है?
(ख) मैं और हरि में क्या संबंध है?
(ग) अंधियारा मिटि जाने से कवि को क्या प्राप्त हुआ ?

4– पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरू, किरपा कर अपनायो।

जनम–जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।

खरचै नहि कोई चोर न लेवै, दिन–दिन बढ़त सवायो।

सत की नाव खेवटिया सतगुरू, भव सागर तर आयो।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख–हरख जस गायो।

(क) 'राम रतन धन पायो' का क्या तात्पर्य है ?
(ख) मीरा ने भव सागर किसे कहा है?
(ग) 'जनम–जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो' में कौन सा अलंकार है?

5– माई री मैं तो लियो गोविन्दो मोल।

कोई कहे छाने कोई कहे चुपके, लियो री बजन्ता ढोल।

कोई कहै मुँहघो कोई कहै सुँहघो, लियो री तराजू तोल।

कोई कहै कारो कोई कहैं गोरो, लियो री अमोलक मोल।।

याही कूँ सब जाणत हैं, लियो री आँखी खोल।

मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्यौ, पूरब जनम कौ कौल।

(क) 'मैं तो लियो गोविन्दो मोल' का क्या तात्पर्य है ?
(ख) छाने एवम चुपके में क्या अन्तर है ?
(ग) मीराबाई ने किस भाषा में रचना की है ?

6– जो रही उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।

(क) उत्तम प्रकृति से कवि का क्या आशय है?
(ख) दूसरी पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है?
(ग) कवि ने किस प्रकार के व्यक्तियों की प्रशंसा की है?

7– रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रंग दून।

ज्यों जरदी हरदी तजैं, तजै सफेदी चून।।

(क) हल्दी एवं चूना मिलाने पर कौन सा रंग बनता है?
(ख) रहीम ने किस प्रकार के प्रेम की सराहना की है?
(ग) हरदी जरदी से कवि का क्या आशय है?

8– दीन सबन को लखत हैं, दीनहि लखै न कोय।

जो रहीम दीनहिं लखैं, दीनबन्धु सम होय।।

(क) कवि ने दीनबन्धु किसे कहा है?

(ख) प्रस्तुत दोहे की शैली क्या है?
(ग) कवि ने दुखी व्यक्तियों के बारे में क्या कहा है?

9– चौक उठी अपने विचार से

कुछ दूरागत ध्वनि सुनती

इस निस्तब्ध निशा में कोई

चली आ रही है कहती

अरे बता दो मुझे दयाकर

कहाँ प्रवासी है मेरा?

उसी बावले से मिलने को

डाल रही हूँ मैं फेरा।

(क) 'अपने विचारों में कौन खोया था?
(ख) 'अरे बता दो मुझे दयाकर' किसका कथन है?
(ग) 'बावले' से कौन मिलने आ रही है?

10– रूठ गया था अपनेपन से

अपना सकी न उसको मै,

वह तो मेरा अपना ही था,

भला मनाती किसको मैं!

यही भूल अब शूल सदृश हो।

साल रही उर में मेरे,

कैसे पाऊँगी उसको मैं

कोई आकर कह दे रे!

(क) 'यही भूल अब शूल सदृश हो' का क्या आशय है ?
(ख) प्रसाद जी ने किस प्रकार की भाषा शैली ग्रहण की है?
(ग) नायिका के हृदय में क्या कष्ट है ?

11— जीवन की लम्बी यात्रा में

खोए भी है मिल जाते,

जीवन है तो कभी मिलन है

कट जाती दुख की राते।

श्रद्धा रुकी कुमार श्रान्त था

मिलता है विश्राम यहीं,

चली इड़ा के साथ जहाँ पर

वह्नि शिखा प्रज्वलित रही।

(क) 'जीवन की लम्बी यात्रा में खोए भी है मिल जाते' से कवि क्या बताना चाहता है?
(ख) जीवन में दुख किसके समान है?
(ग) कवि का जीवन दर्शन स्पष्ट कीजिए।

12— इड़ा उठी, दिख पड़ा राज—पथ

धुँधली—सी छाया चलती,

वाणी में थी करुण वेदना

वह पुकार जैसी जलती।

शिथिल शरीर वसन विश्रृंखल

कबरी अधिक अधीर खुली,

छिन्न पत्र मकरन्द लुटी—सी

ज्यों मुरझायी हुई कली।

(क) कवि के अनुसार झड़ा राजपथ पर क्या देख रही हैं?
(ख) 'छिन्न पत्र मकरन्द लुटी—सी' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?
(ग) कवि के अनुसार श्रद्धा का शरीर थका हुआ और वस्त्र बिखरा हुआ क्यों है?

13— इड़ा चकित,श्रद्धा आ बैठी

वह थी मनु को सहलाती,

अनुलेपन—सा मधुर स्पर्श था

व्यथा भला क्यों रह जाती?

उस मूर्च्छित नीरवता में कुछ

हलके से स्पन्दन आये,

आँखें खुलीं चार कोनों में

चार बिन्दु आकर छाये।।

(क) कवि के अनुसार श्रद्धा कहाँ पर आकर बैठती है?
(ख) 'अनुलेपन—सा मधुर स्पर्श था पक्तियों में कौन सा अलंकार है।
(ग) 'आँखें खुली चार कोनो में चार बिन्दु आकर छाये' पक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए?

14— जो जैसा, उसको वैसा फल

देती यह प्रकृति स्वयं सदया,

सोचने को न रहा कुछ नया,

सौन्दर्य, गीत, बहु वर्ण, गन्ध,

भाषा, भावों के छन्द–बन्ध,

और भी उच्चतर जो विलास,

प्राकृतिक दान वे, सप्रयास

या अनायास आते हैं सब,

सब में है श्रेष्ठ, धन्य, मानव।

(क) कवि ने प्रकृति को सदया क्यों कहा है?
(ख) कवि ने इस प्रकृति में सबसे श्रेष्ठ किसको बताया है?
(ग) 'देती यह प्रकृति स्वयं सदया, सोचने को न रहा कुछ नया', पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए?

15— फिर देखा, उस पुल के ऊपर

बहु संख्यक बैठे हैं वानर।

एक ओर पन्थ के, कृष्णकाय

कंकाल शेष नर मृत्यु–प्राय

बैठा सशरीर दैन्य दुर्बल,

भिक्षा को उठी दृष्टि निश्चल,

(क) कवि पुल के ऊपर क्या देख रहा है?
(ख) कवि के अनुसार जीवन से उदास होकर कौन जी रहा है?

(ग) 'एक ओर पन्थ के, कृष्णकाय, कंकाल शेष नर मृत्यु–प्राय,' पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए?

16– पुस्तकों में है नहीं,

छापी गयी इसकी कहानी,

हाल इसका ज्ञात होता

है न औरों की जबानी,

अनगिनत राही गये इस

राह से, उनका पता क्या,

पर गये कुछ लोग इस पर

छोड़ पैरों की निशानी,

यह निशानी मूक होकर

भी बहुत कुछ बोलती है,

खोल इसका अर्थ, पंथी,

पंथ का अनुमान कर ले।

(क) कवि के अनुसार पुस्तकों में किसकी कहानी नहीं मिलती है?
(ख) 'यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है।' पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।
(ग) कवि ने किसके आधार पर पंथ का अनुमान करने के लिए कहा है?

17– यह बुरा है या कि अच्छा,

व्यर्थ दिन इस पर बिताना

अब असंभव, छोड़ यह पथ

दूसरे पर पग बढ़ाना,

तू इसे अच्छा समझ,

यात्रा सरल इससे बनेगी,

सोच मत केवल तुझे ही

यह पड़ा मन में बिठाना,

हर सफल पंथी, यही

विश्वास ले इस पर बढ़ा है,

(क) कवि किसे छोड़ कर आगे बढ़ने की बात कर रहा है?
(ख) कवि यात्रा सरल करने के लिए क्या बता रहा है?
(ग) 'हर सफल पंथी, यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है,' पक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए?

18– स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग–

कोरकों में दीप्ति आती,

पंख लग जाते पगों को,

ललकती उन्मुक्त छाती,

रास्ते का एक काँटा

पाँव का दिल चीर देता,

रक्त की दो बूँद गिरती,

एक दुनिया डूब जाती,

आँख में हो स्वर्ग लेकिन

पाँव पृथ्वी पर टिके हों,

कंटकों की इस अनोखी

सीख का सम्मान कर ले।

(क) 'कंटकों की इस अनोखी सीख का सम्मान कर ले' पंक्ति से कवि का क्या आशय है?
(ख) कवि के अनुसार पगों में पंख कब लग जाते है?
(ग) कवि पृथ्वी पर पाँव टिकने की बात क्यों कर रहा है?

19— प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग—अंग बास समानी।।

प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।।

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती।।

(क) कवि ने घन और मोरा किसको कहा है?
(ख) कवि के अनुसार किसकी ज्योतिदिन—रात जल रही है?
(ग) 'जाकी अंग—अंग बास समानी' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

20— प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।।

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा ।।

(क) कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सोनहिं से सुहागा कब मिलता है।
(ख) "प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा" पंक्ति से कार्य का क्या आशय है?
(ग) कविता के आधार पर संत रैदास कैसी भक्ति कर रहे हैं?

21— चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल—थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बर तल में।
पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,
मानोंझूम रहे हैं तरु भी मन्द पवन के झोकों से।

(क) किसकी किरणें जल—थल में फैली हुई हैं?
(ख) 'चारु' और 'अवनि' शब्द का अर्थ बताइये।
(ग) उपरोक्त पंक्तियों में कौन—सा अलंकार है?

22— है बिखेर देती बसुन्धरा मोती, सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको सदा सबेरा होने पर।
और विरामदायिनी अपनी संध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका नया रूप झलकाता है।

(क) संध्या के समय सूर्य को विरामदायिनी क्यों कहा गया है?
(ख) सबके सो जाने पर पृथ्वी पर कौन क्या फैला देता है?
(ग) सूर्य सदैव प्रातःकाल क्या बटोरकर ले जाता है?

प्रश्न– निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1– संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जो अपने आमोद–प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका ऐसा मर्मभेदी अनुभव अब तक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शांत करने के लिए सदैव तैयार रहते थे।

प्रश्न –

1. डॉ0 चड्ढ़ा ने गरीब बूढ़े के साथ कैसा व्यवहार किया ?
2. मनुष्य का धर्म क्या है ?
3. बूढ़े भगत को किस प्रकार के मनुष्यों का अनुभव न हुआ था।

2– 'अरे मूर्ख' यह क्यों नहीं कहता कि जो कुछ न होना था, हो चुका। जो कुछ होना था वह कहाँ हुआ? मां–बाप ने बेटे का सेहरा कहां देखा? मृणालिनी का कामना–तरू क्या पल्लव और पुष्प से रंजित हो उठा? मन के वह स्वर्ण–स्वप्न जिनसे जीवन आनंद का स्रोत बना हुआ था, क्या पूरे हो गए? जीवन के नृत्यमय तारिका–मंडित सागर में आमोद की बहार लूटते हुए क्या उसकी नौका जलमग्न नहीं हो गई? जो ना होना था, वह हो गया।

प्रश्न –

1. माँ–बाप बेटे का क्या देखना चाहते थे?
2. 'नौका जलमग्न होना' का क्या अर्थ है?
3. मृणालिनी का कामना–तरू क्या था?

3– ''भगवान बड़ा कारसाज है। उस बखत मेरी आँखों से आंसू निकल पड़े थे, पर उन्हें तनिक भी दया न आई थी, मैं तो उनके द्वार पर होता, तो भी बात न पूछता।' ''तो ना जाओगे? हमने जो सुना था, सो कह दिया'' ''अच्छा किया–अच्छा किया। कलेजा ठंडा हो गया, आँखें ठंडी हो गईं।

प्रश्न –

1. कलेजा ठंडा हो जाने का क्या तात्पर्य है ?

2. ''भगवान बड़ा कारसाज है'' से लेखक का क्या तात्पर्य है ?
3. प्रस्तुत गद्यांश में भगत की किस मनोभावना का चित्रण हुआ है ?

4– पर उसके मन की कुछ ऐसी दशा थी, जो बाजे की आवाज कान में पड़ते ही उपदेश सुनने वालों की होती है। आँखें चाहे उपदेशक की ओर हों, पर कान बाजे ही की ओर होते हैं। दिल में भी बाजे की ध्वनि गूँजती रहती है। शर्म के मारे जगह से नहीं उठता। निर्दयी प्रतिघात का भाव भगत के लिए उपदेशक था, पर हृदय उस अभागे युवक की ओर था, जो इस समय मर रहा था, जिसके लिए एक–एक पल का विलम्ब घातक था।

प्रश्न –

1. भगत किस व्यक्ति से प्रतिशोध लेना चाहता था?
2. भगत के मन की स्थिति कैसी है?
3. वह अभागा युवक कौन था? जो इस समय मर रहा था?

5– आज उस दिन की बात याद करके मुझे जितनी ग्लानि हो रही है, उसे प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे खोज निकालूँगा और उसके पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं, यह जानता हूँ, उसका जन्म यश की वर्षा करने के लिए ही हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है, जो अब से जीवनपर्यन्त मेरे सामने रहेगा।

प्रश्न –

1. प्रस्तुत गद्यांश में किसके मन की ग्लानि की बात कही गयी है?
2. डॉ0 चड्ढा के किस भावना की अभिव्यक्ति प्रस्तुत गद्यांश में हुई है?
3. वह कौन सा आदर्श है जिसे डॉ0 चड्ढा जीवनपर्यन्त अपने सामने रखना चाहते हैं?

6– लोकमानस में अर्से से कार्तिकी पूर्णिमा के साथ गुरु के आविर्भाव का एक संबंध जोड़ दिया गया है। गुरु किसी एक ही दिन को पार्थिव शरीर में अब आविर्भूत हुए होंगे, पर भक्तों के चित्त में वे प्रतिक्षण प्रकट हो सकते हैं। पार्थिव रूप को महत्व दिया जाता है, परंतु प्रतिक्षण आविर्भूत होने को आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक महत्व मिलना चाहिए। इतिहास के पंडित गुरु के पार्थिव शरीर के आविर्भाव के विषय में वाद–विवाद करते रहे, इस देश का सामूहिक मानव–चित्र उतना महत्व नहीं देता।

प्रश्न –

1. गुरु के किन रूपों को महत्व दिया जाता है?
2. चन्द्रमा कितनी कलाओं से परिपूर्ण होता है?
3. कार्तिक पूर्णिमा का सम्बन्ध किस महामानव से है?

7– गुरु जिस किसी भी शुभ क्षण में चित्त में अविर्भूत हो जाएं, वही क्षण उत्सव का है, वही क्षण उल्लसित कर देने के लिए पर्याप्त है। ''नवो नवो भवसि जायमानः'' – गुरु, तुम प्रतिक्षण चित्तभूमि में आविर्भूत होकर नित्य नवीन हो रहे हो। हजारों वर्षों से शरत्काल की यह सर्वाधिक प्रसन्न तिथि प्रभामण्डित पूर्णचंद्र के साथ उतनी ही मीठी ज्योति के धनी महामानव का स्मरण कराती रही है। इस चंद्रमा के साथ महामानवों का संबंध जोड़ने में इस देश का समष्टि चित्त अह्लाद् का अनुभव करता है।

प्रश्न –

1. शरत्काल की किस तिथि को सर्वाधिक प्रभामण्डित मानी जाती है ?
2. पूर्ण चंद्रमा की तिथि किस महामानव का स्मरण कराती है ?
3. गुरु के आविर्भूत का क्षण कैसा होता है ?

8– देश में नए धर्म के आगंतुकों के कारण एक ऐसी समस्या उठ खड़ी हुई थी जो इस देश के हजारों वर्षों के लंबे इतिहास से अपरिचित थी। ऐसे ही दुर्घट काल में इस देश की मिट्टी ने ऐसे अनेक महापुरूषों को उत्पन्न किया जो सड़ी रूढ़ियों, मृतप्राय आचारों, बासी विचारों और अर्थहीन संकीर्णताओं के विरूद्ध प्रहार करने में कुण्ठित नहीं हुए और इन जर्जर बातों से परे सबमें विद्यमान सबको नई ज्योति और नया जीवन प्रदान करने वाले महान जीवन देवता की महिमा प्रतिष्ठित करने में समर्थ हुए।

प्रश्न –

1. देश में किस काल में महापुरूषों की उत्पत्ति हुई?
2. महापुरूष किन कार्यों को करने में कुण्ठित नहीं हुए?

3. देश में किस कारण समस्या उठ खड़ी हुई थी ?

9– विचार और आचार की दुनिया में इतनी बड़ी क्रांति ले आने वाला यह संत इतने मधुर, इतने स्निग्ध, इतने मोहक वचनों को बोलने वाला है। किसी का दिल दुखाए बिना, किसी पर आघात किए बिना, कुसंस्कारों को छिन्न करने की शक्ति रखने वाला, नई संजीवनी धारा से प्राणिमात्र को उल्लसित करने वाला यह संत मध्यकाल की ज्योतिष्क मण्डली में अपनी निराली शोभा से शरत् पूर्णिमा के पूर्णचन्द्र की तरह ज्योतिष्मान है। आज उसकी याद आए बिना नहीं रह सकती।

प्रश्न –

1. नई ज्योतिष्मान धारा किस काल में ज्योतिष्मान हुई?
2. क्रांति लाने वाले किस संत की बात यहां कही गयी है?
3. गुरूनानक देव कुसंस्कारों को किस प्रकार छिन्न–भिन्न करते थें?

10– किसी लकीर को मिटाये बिना छोटी बना देने का उपाय है बड़ी लकीर खींच देना। क्षुद्र अहमिकाओं और अर्थहीन संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने के लिए तर्क और शास्त्रार्थ का मार्ग कदाचित् ठीक नहीं है। सही उपाय है बड़े सत्य को प्रत्यक्ष कर देना। गुरूनानक ने यही किया। उन्होंने जनता को बड़े से बड़े सत्य के सम्मुखीन कर दिया, हजारों दीये उस महाज्योति के सामने स्वयं फीके पड़ गए।

प्रश्न –

1. संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने के लिए सही उपाय क्या है?
2. किसी लकीर को मिटाये बिना छोटा कैसे किया जा सकता है?
3. गुरूनानक ने क्या किया ?

11– सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे से देख कर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया जो इस लता की सघन हरीतिमा में छुप कर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुंचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघु प्राणी की खोज है।

प्रश्न –

1. सोनजुही में कैसी कली लगी थी ?
2. लेखक को आनायास किस लघु जीव की याद आ गई ?
3. प्रस्तुत गद्यांश में लेखक किसकी खोज कर रहा है ?

12–हमारे बेचारे पुरखेन गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, नमयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दुरस्थप्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही दे देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौआ और काँव–काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

प्रश्न –

1. हमारे पुरखे किस रूप में आते हैं?
2. कौवा समादरित कैसे है?
3. भारतीय परंपरा में दूरस्थ प्रियजन के आने का मधुर संदेश किसके द्वारा मिलता है?

13–मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें–नन्हें पंजों से ये मेरे सिर और बालों को इतने हौले–हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता। गर्मियों में जब मैं दोपहर के काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठण्डक में भी रहता।

प्रश्न –

1. गर्मी में वह किस पर लेट जाता था?
2. परिचारिका किसे कहते हैं?
3. लेखक के अस्वस्थ होने पर वह कहां बैठकर सेवा करता था?

14–गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया था। दिन भर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उंगली पकड़ कर हाथ से चिपक गया जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

प्रश्न –

1. दिनभर किसने कुछ नहीं खाया था?
2. गद्यांश के आधार पर बताइये कि गिल्लू को लेखक के पास रहते कितना समय हो गया था?
3. लेखक कैसे जान गया कि गिल्लू की जीवन यात्रा का अन्त आ गया है?

15–सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी इसलिए भी कि लघुगात का, किसी बासन्ती दिन, जुही के पीलाभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है।

प्रश्न –

1. गिल्लू को सबसे अधिक प्रिय क्या था?
2. गिल्लू की समाधि कहाँ दी गई और क्यों?
3. गिल्लू के न रहने पर लेखक ने क्या किया?

16–दुनिया में दो अमोघ शक्तियां हैं – शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि शब्दों ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है। किंतु अंतिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके संतोष माना और जीवनसिद्धि प्राप्त की।

प्रश्न –

1. कस्तूरबा कैसी महिला थी?
2. शब्द और कृति का अर्थ स्पष्ट कीजिए?
3. गांधीजी ने किसकी उपासना की?

17–यह सब श्रेष्ठता या महत्ता कस्तूरबा में कहां से आई ? उनकी जीवन–साधना किस प्रकार की थी ? शिक्षण के द्वारा उन्होंने बाहर से कुछ नहीं लिया था। सचमुच, उनमें तो आर्य आदर्श को शोभा देने वाले कौटुंबिक सद्‌गुण ही थे। असाधारण मौका मिलते ही और उतनी ही असाधारण कसौटी आ पड़ते ही उन्होंने स्वभावसिद्ध कौटुंबिक सद्‌गुण व्यापक किए और उनके जोरों पर हर समय जीवन–सिद्धि हासिल की।सूक्ष्म प्रमाण में या छोटे पैमाने पर जो शुद्ध साधना की जाती है उसका तेज इतना लोकोत्तरी होता है कि चाहे कितना ही बड़ा प्रसंगआ पड़े, व्यापक प्रमाण में कसौटी हो, चरित्रवान मनुष्य को अपनी शक्ति का सिर्फ गुणाकार ही करने का होता है।

प्रश्न –

1. चरित्रवान मनुष्य को अपनी शक्ति का क्या करना चाहिए?
2. चरित्रवान व्यक्ति की क्या विशेषता होती है?
3. किस साधना का तेज लोकोत्तरी होता है?

18–तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भांजे को मिला। पंडितों की बैठक हुई। विषय था ''उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है'' बड़ा गहरा विचार हुआ। सिद्धांत ठहराः तोता अपना घोंसला साधारण खर–पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया सा पिंजरा बना दिया जाय। राज पंडितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने–अपने घर गए ।

प्रश्न –

1. तोते को शिक्षा देने का काम किसे मिला?
2. तोता अपना घोंसला किससे बनाता है?
3. दक्षिणा किसे मिली?

19– संसार में और–और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नही है। एक ढूढों हजार मिलते हैं। वे बोले "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज–खबर कोई लेने वाला नहीं है।"

1. संसार में किसकी कमी नहीं है।
2. किसकी उन्नति हो रही है?
3. निन्दक निन्दा क्यों करते हैं?

20– तोता दिन भर भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकर–टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी–किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया की वह अपनी रोगी चोचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

1. तोता क्यों अधमरा हो गया?
2. तोते का कौन–सा दोष छूट नहीं पाया था?
3. तोता अपनी चोंच से क्या कर रहा था?

प्रश्न– निम्नलिखित लेखकों का जीवन परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दोरचनाओं का नाम लिखिए–

क)प्रेमचंद्र ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी ग) महादेवी वर्मा
घ) काका कालेलकर ङ) रवीन्द्र नाथ टैगोर।

प्रश्न– निम्नलिखित कवियों का जीवन परिचय देते हुए उनकी किन्ही दो रचनाओं के नाम लिखिए–

क)कबीर दास ख) मीराबाई ग) रहीम दास घ) मैथिलीशरण गुप्त ङ) हरिवंश राय बच्चन च) संत रैदास।

प्रश्न– निम्नलिखित मुहावरे एवं लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए–

1. अक्ल पर पत्थर पड़ना।
2. अंधे की लकड़ी होना।
3. अपना उल्लू सीधा करना।
4. अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारना।
5. आटा गीला करना।
6. आकाश पताल का अंतर होना।
7. आटे दाल का भाव मालूम होना।
8. आसमान टूट पड़ना।
9. आसमान सिर पर उठाना।
10. आस्तीन का सांप होना।
11. आँख का अंधा नाम नयनसुख।
12. आँखे बदल जाना।
13. आँखों का तारा होना।
14. आँखों पर परदा पड़ना।
15. आँखों के सामने अंधेरा होना।
16. आँख की किरकिरी होना।
17. आँख से गिरना।
18. ऊंट के मुंह में जीरा।
19. आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।
20. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।
21. अपने घर कुत्ता भी शेर होता है।
22. उल्टी गंगा बहाना।
23. अंगूठा दिखाना।
24. एक अनार सौ बीमार।
25. ईद का चांद होना।
26. आसमान के तारे तोड़ना।
27. अक्ल का दुश्मन होना।
28. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।
29. आँख का काँटा होना।

प्रार्थना पत्र

1. शुल्क मुक्ति हेतु अपने प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।
2. नगर की सफाई व्यवस्था हेतु मुख्य नगर अधिकारी को पत्र लिखिए।
3. आकस्मिक अवकाश हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।
4. परिवार में आयोजित विवाहोत्सव के कारण विद्यालय के प्रधानाचार्य को अवकाश हेतु एक आवेदन पत्र लिखिए।
5. अस्वस्थ होने के कारण अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को कैसे सूचित करेंगे?

एकांकी

1. 'दीपदान' एकांकी की कथावस्तु या कथानक संक्षेप में लिखिए।
2. 'दीपदान' एकांकी के कथा–संगठन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. 'दीपदान' एकांकी के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।
4. 'दीपदान' एकांकी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
5. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'दीपदान' एकांकी की समीक्षा कीजिए।
6. डॉ0 रामकुमार वर्मा के जीवन एवं प्रमुख कृतियों का परिचय दीजिए।
7. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की कथावस्तु या कथानक लिखिए।
8. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
9. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।
10. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की समीक्षा कीजिए।
11. उपेन्द्रनाथ अश्क का जीवन परिचय देते हुये उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए।
12. अभिनेयता की दृष्टि से 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की समीक्षा कीजिए।
13. रौशन के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

संस्कृत

प्रश्न– निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

1. तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
   वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।।
2. असतो मा सद् गमय।
   तमसो मा ज्योतिर्गमय,।।
   मृत्योर् मामृतं गमय।
3. यतो यतः समीहसे,।
   ततो नोऽभयं कुरू।
   शन्नः कुरू प्रजाभ्यो।
   ऽभयं नः प्रशुभ्यः।।
4. सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं,।
   सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
   सत्यस्य सत्यम् ऋतसत्यनेत्रं।
   सत्यात्मकं त्वां शरण प्रपन्नाः।।
5. बुद्धि नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञछत्रु निवर्हणः।
   विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः।।
6. धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
   यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।
7. प्रजापति समः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
   रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।
8. स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपर्वं च भाषते।
   उच्चमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते।
9. इक्ष्वाकुवंशप्रभावो रामो नाम जनैः श्रुतः।
   नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतमान् वशी।।
10. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि
    एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि।।
11. मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः।
    हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणः।।
12. चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम्।
    प्रसादयति या लोकं तं लोको नु प्रसीदति।।
13. अक्रोधेन जयेत क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
    जयेत कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।
14. मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा
    स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।

प्रश्न– निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

1. परमहंसस्य रामकृष्णस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते। तस्य जीवनम् अस्मभ्यम् ईश्वरदर्शनाय शक्तिं प्रददाति। तस्य वचनानि न केवल कस्यचित्

नीरसानि ज्ञानवचनानि अपितु तस्य जीवन–ग्रन्थस्य पृष्ठानि एव तस्य जीवनम् अहिंसायाः मूर्तिमान पाठ विद्यते।

2. स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म बंगेषु हुगलीप्रदेशस्य कामारपुकुर स्थाने 1836 खिस्ताब्दे अभवत्। तस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्। बाल्यकालादेव रामकृष्णः अद्भुतं चरित्रम् अदर्शयत्। तदानीमेव ईश्वरे तस्य सहजा निष्ठा अजायत्। ईश्वरस्य आराधनावसरे स सहजे समाधौ अतिष्ठत्।

3. विश्वविश्रुतः स्वामी विवेकानन्दः अस्यैव महाभागस्य शिष्यः आसीत्। तेन न केवलं भारतवर्षे अपितु पाश्चायदेशेष्वपि व्यापकस्य मानवधर्मस्य डिण्डिमघोषः कृतः। तेन अन्यैश्च शिष्यैः जनानां कल्याणर्थं स स्थाने–स्थाने रामकृष्णसेवाश्रमाः स्थापिताः। ईश्वरानुभवः दुःखितानां जनानां सेवया पुष्यति, इति रामकृष्णस्य महान् सन्देशः।

4. श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः अत्याचारी शासकः आसीत्। स पूर्वं स्वभगिन्याः देवक्याः श्रीवसुदेवेन सह विवाहम् अकरोत्, पश्चाच्च आकाशवाण्या देवकीपुत्रेण स्वमृत्युसमाचारं विज्ञाय उभावपि कारागारे न्यक्षिपत्। तत्रैव कारागारे श्रीकृष्णः जातः।

5. अनन्तरं श्रीकृष्णः गोपालैः सह वन गत्वा गाः चारयति, तत्र च वेणुं वादयति, अनेन सर्वाः गावः गोपालाश्च सर्वाणि कार्याणि विहाय तस्य वेणुवादनं श्रृण्वन्ति। महाकविः व्यासः संस्कृत भाषायां, भक्त कविः सूरदासः हिन्दी भाषायां तस्य बाललीलायाः अनिसुन्दर वर्णनम् अकरोत्।

6. अयं महापुरूषः स्वकीयेन योगाभ्यासबलेनैव एतावान् महान् सजातः। स ईदृशः विवेकी शुद्धचितश्च आसीत् यत् तस्य कृते मानवकृताः विभेदा निर्मूलाः अजायन्त। स्वकीयेन आचारेण एव तेन सर्वं साधितम्।

प्रश्न– निम्नलिखिन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

1. भक्तस्य कः स्वरूपः आसीत्?
2. ईश्वरस्य के नेत्रे स्तः?
3. भक्तः कां प्रतिज्ञा करोति?
4. रामः कस्मिन् वंशे उत्पन्नः आसीत्?
5. जीवलोकस्य रक्षकः कः आसीत्?
6. रामः गाम्भीर्ये केन समः आसीत्?
7. रामस्य के विशिष्टाः गुणाः आसन्?
8. रामः वीर्ये केन सदृशः आसीत्?
9. लोकः कं प्रसीदति?
10. क्रोधं केन जयेत्?
11. कीदृशो मार्गः सर्वोत्तमः भवति?
12. कस्यः बुद्धिः विकसिता भवति?
13. कीदृशाः जना लोके दुर्लभाः?
14. अनृतं केन जयेत?
15. कः तमो हन्ति?
16. लोके कियन्तः सन्तः सन्ति?

17. स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म कुत्र कदा च अभवत्?
18. रामकृष्णः परमहंसः कीदृशः पुरूष आसीत्?
19. कस्य जीवनचरित धर्माचरणस्य प्रायोगिक विवरणं विद्यते?
20. एकदा भक्तेन कस्यचित् किं महिमा वर्णितः?
21. रामकृष्णस्य कः महान संदेशः?
22. स्वामी विवेकानन्दः कस्य शिष्यः आसीत्?
23. कस्य जीवनचरित धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते?
24. श्रीकृष्णं कः आसीत्?
25. कंसः कः आसीत्?
26. श्रीकृष्णस्य जन्म कुत्र अभवत्?
27. वसुदेवेन सद्योजातः कृष्णः कथं रक्षितः?
28. आकाशवाणीं श्रुत्वा कंसः किम् अकरोत्?
29. कंसः राक्षसान् किमर्थम् प्रेषयत?
30. श्रीकृष्णः कथं लोकप्रियो अभवत्?

प्रश्न— निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

1. राम शहर में रहता है।
2. वह विद्यालय जाता है।
3. मेरे मित्र ने पुस्तक पढ़ी।
4. सूर्य पूर्व से निकलता है।
5. उसे पुस्तक पढ़ना चाहिए।
6. हमें घर जाना चाहिए।
7. खेलने के बाद बालक मिठाई खाते हैं ।
8. तुम लोग जाओ ।
9. विद्या परिश्रम से आती है ।
10. वाराणसी गंगा तट पर स्थित है।
11. श्याम प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
12. बड़ो का आदर करो।
13. माला भोजन बना रही है।
14. मोहन घर जाओ।
15. काशी विद्वानों की नगरी है।
16. मैं पढ़ूंगा।
17. मैं गुरु को प्रणाम करता हूँ।
18. तुम अपना कार्य शीघ्र करो।
19. पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
20. घर जाओ और पढ़ो।
21. सीता विद्यालय जाती है।
22. हम दोनों गेंद खेलेंगे।
23. विनय मनुष्यों का आभूषण है।
24. तुम वन जाओ।
25. वह विद्यालय गया।
26. राम गाँव जाता है।
27. वह आँख से काना है।
28. तुम बाजार जाओ।
29. गंगा हिमालय से निकलती है।
30. तुम कहाँ जा रहे हो।
31. रानी अच्छी लड़की है।
32. वह कल काशी जाएगा।

33. दान से कीर्ति बढ़ती है।
34. गांधीजी राष्ट्रपति थे ।
35. तुम क्यों रोते हो?
36. मोर वन में नाचता है।
37. श्याम ने पत्र लिखा।
38. हमें पढ़ना चाहिए।
39. तुम बाजार जाओ।
40. मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
41. घर जाओ और पढ़ो।
42. चुपचाप बैठो।
43. तुम्हारा नाम क्या है?
44. सीता राम की पत्नी थी।
45. राम स्वभाव से दयालु है।
46. वह खाता है।
47. राम के लिए नमस्कार है।
48. सुंदर प्रभात होगा।
49. रमा को प्रातः काल पढ़ना चाहिए।
50. प्रयाग एक तीर्थस्थान है।